227
805
H
P
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1222
10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 805

891.431
Sr57S

N037 (197)

स्वराज्य आल्हा

RECEIVED. 14 DEC. 1931 DEPARTMENT

(197)

महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी।

प्रथमबार २००० } सन् १९३१. { मूल्य -)

स्वराज्य आल्हा।

लेखक—

लाड़लीप्रसाद श्रीवास्तव,

"कंसवध, प्रताप प्रतिज्ञा, भक्त की विजय," आदि

नाटकों के रचयिता—तथा

सम्पादक—

'किसान-मज़दूर'

व

मंत्री झांसी ज़िला किसान व मज़दूर संघ।

प्रकाशक—लाड़लीप्रसाद श्रीवास्तव।

पुस्तक मिलने का पता:—

मैनेजर—'किसान मज़दूर' झांसी।

मुद्रक—बाबू भगवानदास गुप्त 'बलवन्त प्रिंटिङ्ग प्रेस,' झाँसी।

"किसान-मज़दूर"

भारत के गरीब किसान व मज़दूरों की उन्नति के लिये यह साप्ताहिक पत्र गुदरी बाज़ार झाँसी से प्रकाशित होता है। यह किसानों व मज़दूरों का सच्चा हाल बताता है। हर एक भाई का कर्तव्य है कि स्वयम् ही इस पत्र के ग्राहक बनें और भोले भाले किसानों व मज़दूरों को भी यह पत्र सुन में पढ़वाने का उद्योग करें। जिससे किसान-मज़दूरों में जाग्रित व संघठन शक्ति पैदा हो। हर एक कस्बे व शहरों में पत्र के लिये एजेन्ट चाहिये उनको =) प्रति रुपया कमीशन दिया जाता है।

मैनेजर—

किसान-मज़दूर, झांसी।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 805
Date
GOVT. OF INDIA

॥*॥ ॐ ॥*॥

स्वराज्य आल्हा।

सुमरन करिये रामचन्द्र को * जा को नाम रटत संसार।
दुष्ट दलन अरु असुर सहांरन * जिनने लीन मनुज अवतार॥
रावण कुम्भकरण से योद्धा * खल को कटका अपार।
जब त्रेता युग में असुर बढ़े * जब बाढ़्यो पाप अपार॥
मेघनाथ खरदूषण वालो * जो नित करते अत्याचार।
भारत माता रोय पुकारी * तब कियो खलन संहार॥
द्वापर में कंसासुर कहिये * तिन ने कैद किये वसुदेव।
बहिन देवकी जेल में डालो * तहँ पै भये कृष्ण से देव॥
रास रचो जिन गोपिन संगे * अरु कंसा को डारयो मार।
जरासिंधु और शिशुपाल को * जिन दियो जान से मार॥
शूकर वेष बना के प्रभू ने * हिरनाक्ष को दिया पछार।
संहारन को हिरनाकुश के * प्रभू भये नरसिंग अवतार॥
बलि को गर्व मिटावन को * वामन रूप धरो भगवान।
तीन पांव से त्रैलोक्य नाप्यो * नाप्यो धरा और असमान॥

भारत माता दुखी पुकारै * संकट टारो मेरे करतार ।
लेहो खबरया कौन दिना अब * कब आके लगे हो पार ॥
लउ सुमरनी बलवानन की * अर्जुन भीम और चौहान ।
आल्हा ऊदल मलखे कहिये * पुनःवीर प्रताप बड़ो बलवान ॥
वीर शिवाजी अकबर कहिये * दुर्गा दास रठौरी ज्वान ।
गढ़ मंडले की दुर्गा कहिये * लक्ष्मी झाँसी की बलवान ॥
बड़े बहादुर भारतवासी * तिनको कर सके बखान ।
बीघा भर पै होय लड़ाई * मेंडे पर मर जावें किसान ॥
अरी फूट तेरो बुरो होवे * तैने बादर डारये फार ।
सम्पत सारी चम्पत होय गई * जब से रूठ गयो करतार ॥
घसे विदेशी जब भारत में * तब को यारो सुनो हवाल ।
लक्ष्मी बिराजे घर घर में * अब तो परे काल के गाल ॥
किला टीले गढ़िया मढ़िया * जड़े जवाहर मोती हार ।
उड़न बछेरा, उड़न खटोला * भारत में थे कई हजार ॥
घर घर यारी बंधी छोहैं * चौमनिया को नाज बिकाय ।
पांच साल को घर में धरले * बाकी नदिया देय बहाय ॥
मलमल कहिये बंगाले की * बाईस गज को थान ।
गोई आम के भीतर धरके * भेजैं यहाँ के ज्वान ॥

अजब अनोखी शिल्प कला * कछु तारीफ करी न जाय ।
अरी फूट तेरो बुरो होवे * मटिया मेट दयो करवाय ॥
हेल मेल सब चम्पत हो गओ * घर घर छाई रही है फूट ।
घर घर थारो छाई विपदा * अरु पड़ी दुपहरिया लूट ॥
बनिया बन के आये विदेशी * यहाँ पे लगे करन व्यौपार ।
बन्टाढार करो भारत को * इन ने खूब कियो रुजगार ॥
दिल्ली तख्त जहाँगीर को * टामस हुक्म लियो मँगवाय ।
मण्डी बनाई बंगाले में * गोरा भारत में आ जाय ॥
भरे जहाज़ कपड़न के लावे * अरु भारत में बेचे आय ।
रोज़गार जुलाहन को मारो * साठ करोड़ नगद ले जाय ॥
नमक खान पै टैक्स लगो * लुनियां मरे जांय बिलाय ।
सतै कोट लुनियन को थारो * रोज़गार तिन लयो छिनाय ॥
हिन्दू मुस्लिम लड़ें बिचारे * वे भूल गये यह बात ।
विपदा आई भारत देश में * होवे काउ दिना उत्पात ॥
कब्जा कर लओ कछु देश पै * जब राजन पै परी निगाह ।
हमरी फौजैं राजा रख लो * रियासत कोउ नालेव छिनाय ॥
यह मन भाय गई राजन के * तिन फौजनको लियो बिलमाय ।
निर्बल हो गए भारत राजा * भारत रही गुलामी छाय ॥

इसी सिक्को सवाई बिला गई * कागज नोट रहे दिखराय ॥
पानी पसीना गाढ़ कमावे * वो बूड़त हो गल जाय ॥
करे मुकर्रर लाट साब को * जो पावत इक्कीस हज़ार ।
भये कमिश्नर और कलक्टर * भरे गवर्नर बड़े सरदार ॥
तीन रुपट्टी चौकीदार को * चौदा पटवारी को भाय ।
दस २ मानुष जिनके घरमा * कहिये कैसे पार बसाय ॥
चोरी रिश्वत खोरी करके * नुकरा रहे हैं जान बचाय ।
माल मुकदमा और दिवानी * फौजदारी दई है बनाय ॥
ले २ आओ घर २ जाओ * खूब कचहरी दई सजाय ।
पर्वा होवे नदियां बांधे * नहर महकमा दयो बनाय ॥
तार मुहकमा और रेलवे * सब में पैसा लेत छिनाय ।
यन्त्रन द्वारा खेती सिखावें * दफ्तर ज़राअत दयो बनाय ॥
कैद सवाई और जुरमानों * अलगे ब्याज लेत हैं भाय ।
सड़क मदरसा लकड़ी माटी * सब पर टैक्स लगत हैं भाय ॥
जंगल होते सरकारी कह * भूखे ढोर मरत हैं भाय ।
सांस छोड़ के टैक्स लगत हैं * बरणी बिथा न हम से जाय ॥
सुखिया भारत दुखिया होगयो * और रही गुलामी आय ।
देशी राजा मस्त भये अब * मदिरा पातुर में फंस जाय ॥

कारो सिपाही सत्तर पावे * गोरा पावे एक सौ साठ ।
मरे बिचारे कारो सिपाही * गोरा सबरे बन गये लाट ॥
सूखा पर गई भूखा पर गई * और पर रहा है काल ।
सात दिना के बालक मरते * बड़े होत कछु मरते काल ॥
कपड़े बिन सर्दी पै ठिठके * अन बिना मर जावें लाल ।
अगणित रोग भये भारत में * जिसमें मरते बालगोपाल ॥
सन् १४ में छिड़ी लड़ाई * ज़रमन कारन भई करवाय ।
हा हा देवा करे विदेशी * कहिये कैसे पार लगाय ॥
बाधो कर दुखो अंगरेज़न ने * यारो सुनियो कान लगाय ।
नौकर चाकर तुम नाहीं हो * तुम सब लगत हमारे भाय ॥
जरमन लड़ाई जो हम जीते * तुम को सुराज देंगे भाय ।
करी रजपूती तब भारत ने * जरमन राज भंग हो जाय ॥
कट गये भारत वीर हमारे * त्रिया वैसा दई बनाय ।
जीत जात के अंगरेज़ों ने * यादों कुतका दियो दिखाय ॥
भारत मैया दुखी पुकारे * प्रभू लेओ अवतरवा आय ।
भई सन्तान कपूत हमारी * इनको बेड़ी दई पिन्हाय ॥
हा हा कार मचो भारत में * कोई और बँधईया नाय ।
अरी क्रूर तेरो बुरो होवे * मदिरा मेट दयो करवाय ॥

असहयोग की लड़ाई ।

हा हा कार मचो भारत में * तब गांधी को भयो औतार ।
पाप हरन को सुख देवन को * गांधी कृष्णचन्द्र औतार ॥
कर्म योगी कर्मचन्द्र ने * चरखा लीनो अपने हाथ ।
असहयोग सरकार से करदो * अंग्रेजन को छोड़ो साथ ॥
नैना खुल गये रे भारत के * असहयोग तिन दियो रचाय ।
बजो नगाड़ा असहयोग को * भारत वीर जेल को जाय ॥
हा हा दैया करें विदेशी * करता कहा रची भगवान ।
कैसे राज यहां पै कर हैं * नहीं दीखे अब तो कल्यान ॥
छोड़ चाकरी दई नुकरन ने * लिख के कागज दओ पकराय ।
खलबल परगई बृटिश राजमें * गोरा भारत में घबराय ॥
तौलों सता एक होगई थी * थानो दियो एक जलाय ।
रूठ के गांधी बोलन लागे * असहयोग बन्द होय जाय ॥
शान्त लड़ाई हमने छेड़ी * तुमतो हुल्लड़ दियो मचाय ।
हुक्म मान के तब बापू को * असहयोग बन्द होय जाय ॥
लेकिन आगी हृदय सुलग गई * सो अब कैसे जाय बुझाय ।
वीर सपूत भारत के भैय्या * जिनने बन्ध दिये खलबाय ॥

लार्ड साहब पै सुपुर्दैन्ट पै * गोली गोला दई चलाय ।
गांधी सोची अपने मन मां * बालक मरवे को न डराय ॥
सन् २६ दिसम्बर महीना * कांग्रेस को तो लगो दरबार ।
बीड़ा खाओ गांधी बाबा * स्वतन्त्रता की दई ललकार ॥
ग्यारह शर्तें लिख पाती में * भेजी पास लाट सरकार ।
पाती बांची जब इरविन ने * बिगड उठी भारत सरकार ॥
चाहे पचालो राज गांधी * और चाहे लवरे हथयार ।
चाहे कमती मालगुजारी * कमती चाहे बड़ो पगार ॥
रुपया रोज गरीबन चाहे * चाहे भारत के रुजगार ।
सरु गाय और भूम किसानी * नमक टैक्स पै करता रार ॥
ऐसी ऐसी ग्यारह बातें * पूरी हैान कबहुं नहीं पाय ।
गलती कर रहे गांधी बाबा * समझ बूझ के धरियो पांव ॥

सत्याग्रह संग्राम ।

बांच के पाती लाट साब की * लेके रामचन्द्र को नाम ।
हुकम चढ़ा दयो गांधी बाबा * सत्याग्रह छेड़ो संग्राम ॥
छापा मारो सिन्धु तरेटी * नमक खान पे पहुँचे जाय ।
डटा मोरचा धरसाना को * गांधी कैद लये करवाय ॥

बजो नगाड़ा स्वदेश में तब * सिन्ध गुजरात गूंजन लाग ।
बम्बई किरांची और मदरास * पंजाब बंग में लागी आग ॥
शाह जवाहर कैद करे जिन * सैयद मोरचा दिया लगाय ।
लाठी पड़ रही बलमन्देर पै * रक्त की नदियां मूं से बहाय ॥
पिचत्तर साल के सैयद पकरे * सरोजनी तब दई ललकार ।
सूना खेल कबहुँ नहिं हुइये * भारत की त्रियां हुशयार ॥
चले गवर्नर रात रात में * धरसाना में पहुँचे जाय ।
आधी रात के रे अरसा में * सरोजनी को लई बंधवाय ॥
धिक २ तुमरी मरदानों को * डारो तुम त्रियन पर हाथ ।
बड़ो कष्ट है स्वदेश को तुम * सो मिले मरघट को साथ ॥
वर्षा हो गई धरसाना में * अरु पानी से भर गये क्यार ।
बन्द मोरचा धरसाने को * कौंसल छोड़ी पटेल सरदार ॥
मालवीय जी ने सब भारत में * वस्त्र विदेशी दिये बंधाय ।
भारत ललना ठाडो हो गई * कपड़न मुरचा दिया लगाय ॥
कसम खाय गये भारतवासी * शान्ती भ्रम में गई समाय ।
हम ना मरिहैं काऊ रिपू को * चाहे तन धजी २ उड़ जाय ॥
चोटी काटें रक्त बहावें * ना अब धरें पिछारी पाय ।
भारत स्वतन्त्र करके रहैं * चाहे प्राण रहैं कि जाय ॥

शोलापुर अरु पेशावर में * गोली चली दई सरकार ।
कहुं पै डण्डा कहुं पै गोली * अंधाधुन्ध करै सरकार ॥
विकट लड़ाई सत्याग्रह की * संपूर्ण देश में छाई आय ।
लगी टूटने सिस्टम की धारा * तब सरकार गई घबराय ॥
नमक मोरचा गुरजर देश में * जंगल कटैं मध्य के प्रान्त ।
झंडा सलामी बम्बई देश में * साहित्य जप्त बंग के प्रान्त ॥
धके वकिल्स पंजाब देश में * टूटे गली गली में यार ।
मादक और विदेशी वस्तू * इनको तो मिट गयो रुजगार ॥
सत्याग्रह की कठिन मार से * व्याकुल भारत की सरकार ।
दमन करन को सत्याग्रह के * जारी हुक्म किये सरकार ॥
छै महीना का जेल को जैहैं * आरडीनेन्स दये बनवाय ।
बदी हमारी जो कोऊ छापे * ताको प्रेस जप्त होय जाय ॥
पर्चा बांटै पुलिस मुहकमा * और जो पल्टन भीतर जाय ।
दुकानों पर धरना देहै * ताकी सज़ा देयो करवाय ॥
गैर कनूनी कांग्रेस कर दई * मेम्बर घर पकड़े सब जाय ।
सम्पत सारी खम्पत कर लई * कोऊ हाल सुनैया नाय ॥
करा ट्रब्यूनल्ल भगत के लाने * फांसी तख्ता दिया चढ़वाय ।
जङ्गल कर बन्दी के लाने * आरडीनेन्स दये बनवाय ॥

गुप्ता पकड़े बोस को पकड़ा * बंगाले के जो सरदार ।
पटेल देसाई को पकड़ा * जो गुजरात के सूबेदार ॥
पालीवाल अरु मालवीय को * युक्त प्रान्त के बड़े सरदार ।
गोविन्ददास मध्य प्रान्त के * सब पकड़े पंजाबी सरदार ॥
खैर धुलेकर झांसी के वे * मुरलीधर और कुंजबिहार ।
रामनाथ और खुदाबक्स जी * गार्गीय भार्गव बड़े सरदार ॥
कंचन सेवक रामेश्वर को * रुस्तम कृष्णा जेल में डार ।
उतरत अषाढ़े हमको भेजा * १५ मास को कारागार ॥
वालिन्टियर और बड़े २ नेता * गिनती में अस्सी हजार ।
भारत ललना भारत देश की * बहुतक दई जेल में डार ॥
कठिन लड़ाई सत्याग्रह की * ताकी मार सही ना जाय ।
रिआया के सरकार विदेशी * सारी हुकम दिया फरमाय ॥
डण्डा मारो लाठी मारो * बेढब देओ इनको मार ।
निहत्थे शान्त रूप वीरों पर * गोली चला दई सरकार ॥
धन्य कोख को धन्य माय को * जेल भेजाए हमरे भाय ।
हंसते २ बलिदान भए * सिर अपने को दिया चढ़ाय ॥
लाज बचाई शीस को देके * भारत के वीर लड़ैते लाल ।
बहुतक मरगये हजारों घायल * धन धन भारत के हैं लाल ॥

खबरें उड़ गईं विदेशियों में * वे सब बहुत लगे खिझान ।
रसिया जर्मन फ्रांस कहै * अमरीका और जापान ॥
डण्डा चलाना गोली चलाना * निहत्थों पर करना वार ।
धर्म रजपूतों का यह नहीं है * यह है भयानक अत्याचार ॥
गोल मेज तब सभा बुलाई * सपरू जयकर नरम सरदार ।
पटियाला और बीकानेर के * हुक्सर ग्वालियर के सरदार ॥
मरजा अली गोल मेज में * अब हिन्द आज़ादी पाय ।
नहीं तो कब्र यहीं बनेगी * यूं कह प्राण दिये बिसराय ॥
बोले सपरू गोल मेज में * सोती क्यों बृटिश सरकार ।
बने कमेटी स्वराज के हित * नातर मिटे बृटिश सरकार ॥
जागे सभा सिरमवर बैठे * भरमा भूत लगे दरबार ।
गांधी आवे गोल मेज में * तब स्वराज देवै सरकार ॥
प्यारा महात्मा के अरसा में * भारी सत्याग्रह की मार ।
परेशान सरकार होयगी * तब छोड़े भारत सरदार ॥
जुरी कचेहरी तब दिल्ली में * गांधी जवाहर आय हमार ।
बड़े बड़े नेता स्वदेश के * आलम अन्सारी सरदार ॥
मन का सच्चा इरविन लाट था * समझौता तिन दिया कराय ।
जब वाल सरकार फेर है * जो औलाम नहीं था भाय ॥

। जो जुरमाना मिला नहीं था * वह सब माफ दिया करवाय ।
॥ नमक जहां पै बन सका है * तहं पै नमक बनेगा भाय ॥
। एकदा बकड़ी अब ना हुइहै * शान्ती बरता देओ भाय ।
॥ गोल मेज पंचायत हुइहै * जी में स्वराज मिलैहै भाय ॥
। गांधी इरविन सुलह होगई * वायु हुक्म दियो फरमाय ।
॥ बन्द लड़ाई सत्याग्रह की * भारत वीरो करदो जाय ॥
। करो संगठन ग्राम ग्राम में * अपनी सभा बनाओ आज ।
॥ संघटित होवो भारतवासी * जासे सुधरे बिगरे काज ॥
। कैदी छूटे सत्याग्रह के * जेल के खुल गये द्वार ।
॥ शान्ति विराजी भारत देश में * धन धन इरविन सरकार ॥
। धन २ मोहन करमचन्द को * जो है कृष्णचन्द्र औतार ।
॥ आहा चलो सत्याग्रह को * सत्याग्रह है विकट हथियार ॥
। क्षमा माफ सब करदो भैया * प्रसाद सेवक कहै पुकार ।
॥ ना मैं शायर ना मैं कवि हूं * छोटो सेवक लोगों में तुम्हार ॥
। प्रथम भाग याहांसे होगयो * दूसर गोल मेज को भाय ।
॥ जो कुछ देहैं सरकार विदेशी * लिख हों प्रातः शीश नवाय ॥

❀ इति ❀